Chapter 8:

Business Finance

Part 4

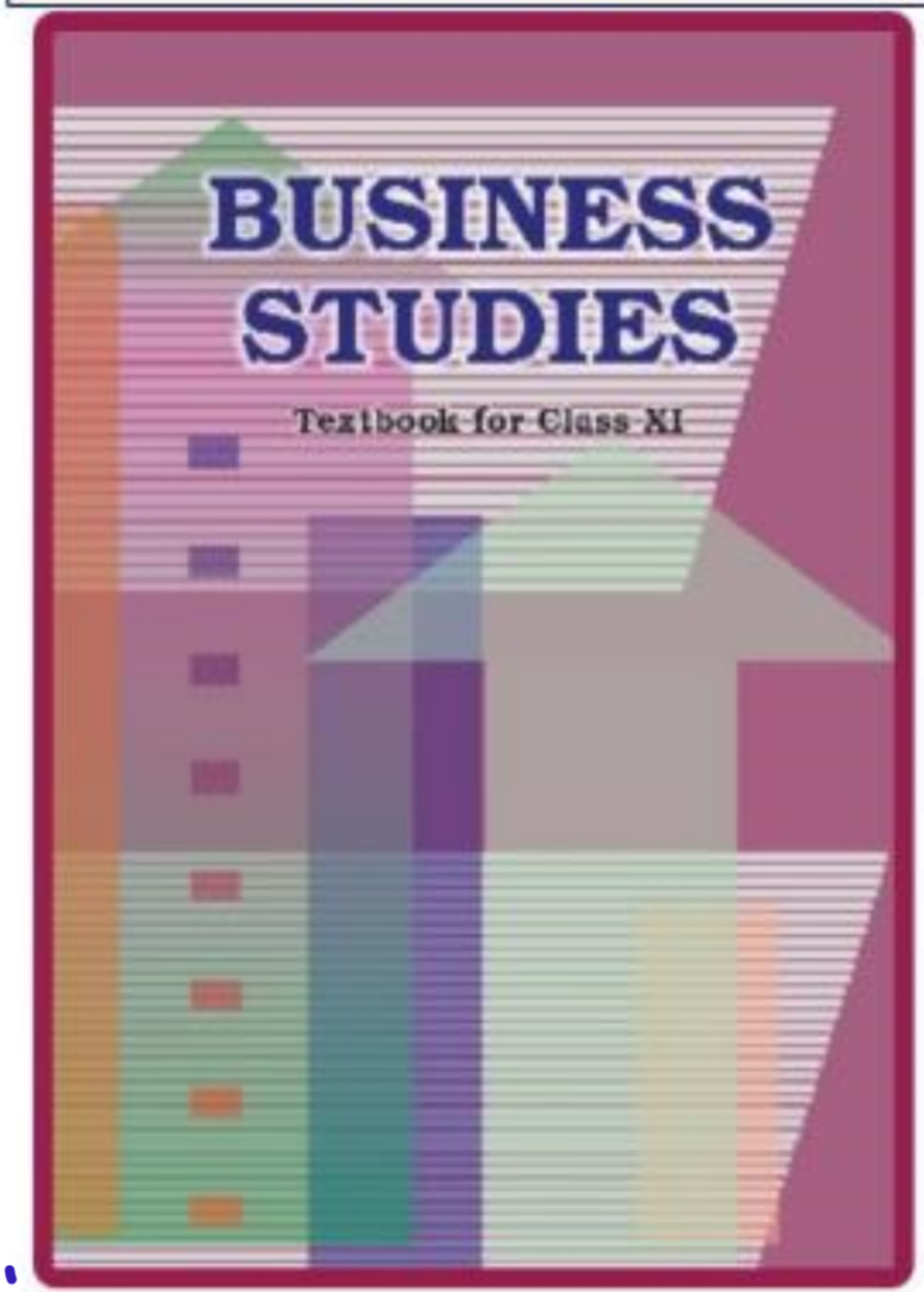

Types of Preference Shares/संचयी और असंचयी:

1. Cumulative and Non-Cumulative:

- The preference shares which enjoy the right to accumulate unpaid dividends in the future years, in case the same is not paid during a year are known as cumulative preference shares.
- On the other hand, on non-cumulative shares, dividend is not accumulated if it is not paid in a particular year.
- वे अधिमान्य शेयर जो भविष्य के वर्षों में अवैतनिक लाभांश को संचित करने का अधिकार रखते हैं, यदि किसी वर्ष के दौरान उसका भुगतान नहीं किया जाता है, तो संचयी अधिमान्य शेयर कहलाते हैं।
- दूसरी ओर, असंचयी शेयरों में, यदि किसी विशेष वर्ष में लाभांश का भुगतान नहीं किया जाता है, तो लाभांश संचित नहीं होता है।

Cumulative Preference Shares

- Priority: These accumulated dividends must be paid in full in a subsequent year before any dividends can be paid to common (equity) shareholders.
- Investor Benefit: This provides a greater degree of security for the investor, as they are assured that missed payments will eventually be recovered, giving these shares a debt-like quality.
- Company Flexibility: It provides less flexibility for the issuing company during financial downturns, as it creates a backlog of payments.
- प्राथमिकता: इन संचित लाभांशों का भुगतान अगले वर्ष में पूर्ण रूप से किया जाना चाहिए, उसके बाद ही सामान्य (इक्विटी) शेयरधारकों को लाभांश का भुगतान किया जा सकता है।
- निवेशक लाभ: यह निवेशक को अधिक सुरक्षा प्रदान करता है, क्योंकि उन्हें आश्वासन दिया जाता है कि छूटे हुए भुगतान अंततः वसूल हो जाएँगे, जिससे इन शेयरों को ऋण जैसी गुणवत्ता प्राप्त होती है।
- कंपनी लचीलापन: यह वित्तीय मंदी के दौरान जारीकर्ता कंपनी के लिए कम लचीलापन प्रदान करता है, क्योंकि इससे भुगतानों का एक लंबित बोझ बनता है।

Non-Cumulative Preference Shares

- No Arrears: There is no accumulation of unpaid dividends; the dividend is forfeited for that year.
- Investor Risk: This presents a higher risk for the investor, as they do not have a claim on past due dividends.
- Company Benefit: It provides more financial flexibility for the company, especially during difficult financial periods, as there is no obligation to make up for missed dividend payments.
- कोई बकाया नहीं: अवैतनिक लाभांश का कोई संचय नहीं होता; उस वर्ष का लाभांश जब्त कर लिया जाता है।
- निवेशक जोखिम: यह निवेशक के लिए अधिक जोखिम प्रस्तुत करता है, क्योंकि उनका पिछले देय लाभांश पर कोई दावा नहीं होता।
- कंपनी लाभ: यह कंपनी को, विशेष रूप से कठिन वित्तीय अवधियों के दौरान, अधिक वित्तीय लचीलापन प्रदान करता है, क्योंकि छूटे हुए लाभांश भुगतानों की भरपाई करने की कोई बाध्यता नहीं होती।

2. Participating and Non-Participating:

- Preference shares which have a right to participate in the further surplus of a company shares which after dividend at a certain rate has been paid on equity shares are called participating preference shares.
- The non-participating preference are such which do not enjoy such rights of participation in the profits of the company.
- सहभागी और गैर-सहभागी: वे अधिमान्य शेयर जिन्हें इक्विटी शेयरों पर एक निश्चित दर पर लाभांश का भुगतान करने के बाद कंपनी के शेयरों के आगे के अधिशेष में भाग लेने का अधिकार होता है, सहभागी अधिमान्य शेयर कहलाते हैं।
- गैर-सहभागी अधिमान्य शेयर वे होते हैं जिन्हें कंपनी के मुनाफे में भागीदारी का ऐसा अधिकार प्राप्त नहीं होता है।

- **3. Convertible and Non-Convertible:**
- Preference shares that can be converted into equity shares within a specified period of time are known as convertible preference shares. On the other hand, non-convertible shares are such that cannot be converted into equity shares.
- परिवर्तनीय और अपरिवर्तनीय: वे अधिमान्य शेयर जिन्हें एक निश्चित अवधि के भीतर इक्विटी शेयरों में परिवर्तित किया जा सकता है, परिवर्तनीय अधिमान्य शेयर कहलाते हैं। दूसरी ओर, अपरिवर्तनीय शेयर वे होते हैं जिन्हें इक्विटी शेयरों में परिवर्तित नहीं किया जा सकता।

Debentures:

- Debentures are an important instrument for raising long term debt capital. A company can raise funds through issue of debentures, which bear a fixed rate of interest.
- The debenture issued by a company is an acknowledgment that the company has borrowed a certain amount of money, which it promises to repay at a future date.

- दीर्घकालिक ऋण पूंजी जुटाने के लिए डिबेंचर एक महत्वपूर्ण साधन है। एक कंपनी डिबेंचर जारी करके धन जुटा सकती है, जिस पर एक निश्चित ब्याज दर होती है।
- किसी कंपनी द्वारा जारी किया गया डिबेंचर इस बात की स्वीकृति है कि कंपनी ने एक निश्चित राशि उधार ली है, जिसे वह भविष्य में चुकाने का वादा करती है।

- Debenture holders are, therefore, termed as creditors of the company. Debenture holders are paid a fixed stated amount of interest at specified intervals say six months or one year.
- Public issue of debentures requires that the issue be rated by a credit rating agency like CRISIL (Credit Rating and Information Services of India Ltd.) on aspects like track record of the company, its profitability, debt servicing capacity, credit worthiness and the perceived risk of lending.

- इसलिए, डिबेंचर धारकों को कंपनी का लेनदार कहा जाता है। डिबेंचर धारकों को छह महीने या एक वर्ष जैसे निर्दिष्ट अंतराल पर एक निश्चित ब्याज राशि का भुगतान किया जाता है।
- डिबेंचर के सार्वजनिक निर्गम के लिए यह आवश्यक है कि कंपनी के ट्रैक रिकॉर्ड, उसकी लाभप्रदता, ऋण सेवा क्षमता, ऋण पात्रता और उधार देने के संभावित जोखिम जैसे पहलुओं के आधार पर क्रिसिल (क्रेडिट रेटिंग एंड इंफॉर्मेशन सर्विसेज ऑफ इंडिया लिमिटेड) जैसी क्रेडिट रेटिंग एजेंसी द्वारा निर्गम की रेटिंग की जाए।

- Issue of Zero Interest Debentures (ZID) which do not carry any explicit rate of interest has also become popular in recent years. The difference between the face value of the debenture and its purchase price is the return to the investor.
- हाल के वर्षों में शून्य ब्याज डिबेंचर (ZID) जारी करना भी लोकप्रिय हो गया है, जिन पर कोई स्पष्ट ब्याज दर नहीं होती। डिबेंचर के अंकित मूल्य और उसके क्रय मूल्य के बीच का अंतर निवेशक को मिलने वाला प्रतिफल होता है।

A company can issue different types of debentures.

1. Secured and Unsecured/ सुरक्षित और असुरक्षित:

- Secured debentures are such which create a charge on the assets of the company, thereby mortgaging the assets of the company.
- Unsecured debentures on the other hand do not carry any charge or security on the assets of the company.
- सुरक्षित डिबेंचर वे होते हैं जो कंपनी की परिसंपत्तियों पर भार डालते हैं, जिससे कंपनी की परिसंपत्तियाँ गिरवी रख दी जाती हैं।
- दूसरी ओर, असुरक्षित डिबेंचर कंपनी की परिसंपत्तियों पर कोई भार या सुरक्षा नहीं रखते हैं।

2. Registered and Bearer/पंजीकृत एवं वाहक

Registered debentures are those which are duly recorded in the register of debenture holders maintained by the company. These can be transferred only through a regular instrument of transfer. In contrast, the debentures which are transferable by mere delivery are called bearer debentures.

पंजीकृत डिबेंचर वे होते हैं जो कंपनी द्वारा बनाए गए डिबेंचर धारकों के रजिस्टर में विधिवत दर्ज होते हैं। इन्हें केवल नियमित हस्तांतरण प्रपत्र के माध्यम से ही हस्तांतरित किया जा सकता है। इसके विपरीत, वे डिबेंचर जो केवल सुपुर्दगी द्वारा हस्तांतरित किए जा सकते हैं, वाहक डिबेंचर कहलाते हैं।

3. Convertible and Non-Convertible/परिवर्तनीय और अपरिवर्तनीय:

Convertible debentures are those debentures that can be converted into equity shares after the expiry of a specified period. On the other hand, non-convertible debentures are those which cannot be converted into equity shares.

परिवर्तनीय डिबेंचर वे डिबेंचर होते हैं जिन्हें एक निश्चित अवधि के बाद इक्विटी शेयरों में परिवर्तित किया जा सकता है। दूसरी ओर, अपरिवर्तनीय डिबेंचर वे होते हैं जिन्हें इक्विटी शेयरों में परिवर्तित नहीं किया जा सकता।

4. First and Second:

Debentures that are repaid before other debentures are repaid are known as first debentures. The second debentures are those which are paid after the first debentures have been paid back.

जिन ऋणपत्रों का भुगतान अन्य ऋणपत्रों के भुगतान से पहले किया जाता है, उन्हें प्रथम ऋणपत्र कहते हैं। द्वितीय ऋणपत्र वे होते हैं जिनका भुगतान प्रथम ऋणपत्र के भुगतान के बाद किया जाता है।

Merits

(i) It is preferred by investors who want fixed income at lesser risk;

(ii) Debentures are fixed charge funds and do not participate in profits of the company;

(iii) The issue of debentures is suitable in the situation when the sales and earnings are relatively stable;

(iv) As debentures do not carry voting rights, financing through debentures does not dilute control of equity shareholders on management;

(v) Financing through debentures is less costly as compared to cost of preference or equity capital as the interest payment on debentures is tax deductible.

Note: Tax-Deductible Interest:

- Unlike dividends paid to preference or equity shareholders, which are paid out of after-tax profits, the interest paid to debenture holders is treated as a business expense.
- कर-कटौती योग्य ब्याज:
- वरीयता या इक्विटी शेयरधारकों को दिए जाने वाले लाभांश के विपरीत, जो कर-पश्चात लाभ से भुगतान किए जाते हैं, डिबेंचर धारकों को दिए जाने वाले ब्याज को व्यावसायिक व्यय माना जाता है।

Foundation classes. live

Limitations

Commerce MCQ with Sachin Sir — Telegram

(i) As fixed charge instruments, debentures put a permanent burden on the earnings of a company. There is a greater risk when earnings of the company fluctuate;

(ii) In case of redeemable debentures, the company has to make provisions for repayment on the specified date, even during periods of financial difficulty;

(iii) Each company has certain borrowing capacity. With the issue of debentures, the capacity of a company to further borrow funds reduces.